स्वायत्तता का जलमग्न और हाशिए पर होना होगा। रूसो को व्यक्तिगत अधिकारों की कीमत पर सत्ता को संप्रभु के रूप में रखने के लिए दोषी ठहराया गया था। उदारवादियों का मानना था कि एक व्यक्ति के अधिकार राज्य की मनमानी प्रकृति के खिलाफ एक ढाल के रूप में कार्य करते हैं। यदि कभी राज्य ने अपने अधिकार की सीमा को पार किया, तो व्यक्ति कभी भी अपने अधिकारों का आह्वान करके अपनी स्वायत्तता की रक्षा कर सकते हैं।

रूसो ने अपने आलोचकों को एक सार्वजनिक जीवन तैयार करके जवाब दिया जो व्यक्तियों की नैतिक स्वतंत्रता की रक्षा करेगा। वह लोकतांत्रिक संस्थानों के पक्ष में थे जो सार्वजनिक जीवन की नैतिकता की रक्षा करेंगे। रूसो के अनुसार प्रतिनिधि संस्थाएँ मनुष्य को भ्रष्ट करती हैं। वे समूहों के बीच प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा करते हैं और सहयोग और साथ देने की भावना को मारते हैं। प्रतिनिधि संस्थाएं भी इस विचार पर आधारित हैं कि 'विजेता सब लेता है'। ये संस्थाएं गुटों और हित समूहों को संगठित करके एक विभाजनकारी भावना पैदा करती हैं और लोकप्रिय संप्रभुता और नैतिकता को कमजोर करती हैं। यहाँ, रूसो राज्य के लॉकियन सिद्धांत से भिन्न था। लॉक के लिए, राज्य का गठन व्यक्तिगत सदस्यों के जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति की रक्षा के उद्देश्य से किया गया था। लेकिन रूसो का मानना था कि राज्य द्वारा संपत्ति की सुरक्षा केवल औपचारिक समानता की ओर ले जाएगी। यह अमीरों के लिए फायदेमंद होगा क्योंकि वे गरीबों से अपनी संपत्ति की रक्षा करना चाहते हैं। यद्यपि रूसो ने लॉक के सामाजिक अनुबंध सिद्धांत से अत्यधिक प्रेरणा प्राप्त की, वे दोनों राज्य के उद्देश्यों के संदर्भ में भिन्न थे। रूसो के लिए, सामान्य इच्छा पर कानून बनाने के लिए समुदाय के व्यक्तिगत सदस्यों को आयस में समान होना चाहिए। समानता नैतिकता की ओर ले जाएगी जो संविधान और सामान्य इच्छा की आज्ञाकारिता को जन्म देगी।

बोध प्रश्न 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।
ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) रूसो ने उदार प्रतिनिधि सरकार की आलोचना क्यों की?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.5 विश्व शांति के लिए राष्ट्र संघ

रूसो अपने समय में यूरोप के गंभीर संकट से अवगत थे। यूरोप गंभीर समस्याओं में उलझा हुआ था। गरीब देशों में असुरक्षा और अन्याय व्याप्त था। बाहरी हमलों या युद्ध के आसन्न खतरों के कारण भारी सैन्य खर्च थे। अंतरराष्ट्रीय समझौतों के लिए

गारंटी का अभाव मौजूद था। मुद्दों पर न्याय पाने के महंगे और असुरक्षित साधन थे। व्यापार की असहनीय हानि और राष्ट्रों की दरिद्रता व्याप्त थी।

रूसो के सामान्य इच्छा के आवेदन का आकलन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी किया जा सकता है जब उन्होंने दुनिया में शांति और सद्भाव प्राप्त करने और युद्धों को समाप्त करने के लिए कानून के अधिकार के तहत राष्ट्रों के संघ की मांग की। रूसो ने संघ बनाने के लिए चार महत्वपूर्ण शर्तें निर्धारित कीं – सबसे पहले, प्रत्येक महत्वपूर्ण शक्ति को संघ का सदस्य होना चाहिए; दूसरा, राष्ट्रों द्वारा बनाए गए कानूनों को बाध्यकारी होना चाहिए; तीसरा, एक बलपूर्वक प्राधिकरण को सामान्य संकल्पों का पालन करना होता है और अंत में, किसी भी सदस्य को महासंघ से हटने की अनुमति नहीं दी जा सकती है।

रूसो ने एक योजना तैयार की जिसमें एक संघ बनाने और युद्धों को समाप्त करने के लिए पांच लेख शामिल थे। सबसे पहले मध्यस्थता या न्यायिक घोषणाओं द्वारा सभी संघर्षों को निपटाने और समाप्त करने के लिए एक कांग्रेस के साथ एक स्थायी गठबंधन स्थापित करना है। दूसरा यह तय करना है कि किन राष्ट्रों के पास वोट होगा, राष्ट्रपति पद एक से दूसरे में कैसे पारित होना चाहिए और आम, सामान्य खर्चों को प्रदान करने के लिए योगदान कोटा कैसे बढ़ाया जाना चाहिए। तीसरा यह घोषित करना था कि सभी मौजूदा सीमाओं को स्थायी माना जाना था। चौथे ने उल्लंघन करने वालों पर प्रतिबंध लगाने और उन्हें कानूनों का पालन करने के लिए मजबूर करने की बात कही। पांचवें ने निर्णय लेने के लिए बहुमत के वोट का सुझाव दिया।

रूसो का विचार था कि उनकी योजना किसी भी युद्ध के पीछे के बुरे इरादों को दूर कर देगी। उन्होंने उन उद्देश्यों को विजय प्राप्त करने, आक्रमण से रक्षा करने, एक शक्तिशाली पड़ोसी को कमजोर करने, हमले के खिलाफ राष्ट्रों के अधिकारों को बनाए रखने और एक ऐसे अंतर को सुलझाने के रूप में सूचीबद्ध किया जो मिलनसार वार्ता को चुनौती देता है और कुछ संधि दायित्वों को पूरा करता है। उनका मानना था कि एक महासंघ का निर्माण किसी भी युद्ध के सभी बुरे उद्देश्यों को कम कर देगा।

बोध प्रश्न 3

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।
ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) रूसो की राष्ट्र संघों की अवधारणा की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.6 आलोचना

रूसो के सामान्य इच्छा या जनरल विल के सिद्धांत की कड़ी आलोचना हुई। उन्हें एक अधिनायकवादी के रूप में बदनाम किया गया था। आलोचकों ने कहा कि रूसो की सामान्य इच्छा का सिद्धांत हिटलर और स्टालिन की तानाशाही के समान है।

रूसो के नागरिक समाज में, कोई भी सदस्य सामान्य इच्छा के नियमों से आगे नहीं बढ़ सकता है; अन्यथा वह सजा को आमंत्रित करेगा। आलोचकों ने उन्हें अत्याचारी भी कहा। उन्होंने कहा कि उनके सिद्धांत ने विविधता और विचारों की विविधता के लिए कोई जगह नहीं छोड़ी है। एकल समरूप इकाइयाँ बनाने के लिए रूसो को दोषी ठहराया गया था। रूसो के लिए, नैतिकता को केवल एक विशेष तरीके से परिभाषित किया जाना था और वह है सामान्य इच्छा। वह नैतिकता के अन्य पहलुओं को स्वीकार नहीं करता है। उसके लिए, नैतिकता पर कोई विरोधी दृ ष्टिकोण मौजूद नहीं है। ऐसा लगता है कि रूसो के नागरिक समाज में अंतर मौजूद नहीं है। विभिन्न समाजों की सुंदरता उनकी भिन्नता और विविधता है। सभी को सामान्य इच्छा के कानून का पालन करने के लिए कहने से एकरसता और एकरूपता आएगी। यह भी प्रमुख कारण था कि रूसो की लोकप्रिय संप्रभुता की अवधारणा की आलोचना की गई थी।

नारीवादियों ने रूसो के सामान्य इच्छा के सिद्धांत की आलोचना की क्योंकि इससे पितृसत्तात्मक कानूनों का दावा होगा। शक्तिशाली पुरुष नैतिकता को इस तरह परिभाषित करेंगे जिससे महिलाओं को अधीनता और हाशिए पर रखा जाएगा।

दूसरा, रूसो को विश्वास था कि समाज के लिए केवल अच्छे और नैतिक कानून बनाए जाएंगे। वह इतना आत्मविश्वासी है कि लोग अपनी वास्तविक इच्छा से ही शासित होंगे। सदस्यों में वास्तविक इच्छा उन्हें सामान्य और सार्वजनिक हितों के आधार पर निस्वार्थ कानून बनाने की अनुमति देगी। प्लेटो ने कहा कि निजी संपत्ति का अधिग्रहण और परिवार होने से निहित स्वार्थ आते हैं। तो क्या रूसो यह सुनिश्चित कर सकता है कि जब कोई व्यक्ति नागरिक समाज में प्रवेश करता है, अपना परिवार बनाता है और निजी संपत्ति अर्जित करता है, तो वह अपने निम्न और स्वार्थी हितों से प्रेरित नहीं होगा।

तीसरा, देशों के आकार और उनकी विशाल जनसंख्या को देखते हुए सामान्य इच्छा का गठन बहुत कठिन होगा। इसमें समय भी लगता है और कानूनों को बनाने और लागू करने में अधिक समय लगता है।

रूसो ने समझा कि नागरिक समाज में मनुष्य स्वार्थी हो जाएगा और इसके लिए वह लोकतांत्रिक संस्थानों के निर्माण का सुझाव देता है जो नैतिक कानूनों और सामान्य हितों को आगे बढ़ाएंगे। वह एक महत्वपूर्ण पूर्व शर्त रखता है कि एक निश्चित स्तर की सामाजिक और आर्थिक समानता मौजूद होनी चाहिए। रूसो का कहना है कि यदि मनुष्य लोकतंत्र की उपस्थिति में और समानता के मौलिक स्तर के साथ गलती करता है, तो उस व्यक्ति को 'स्वतंत्र होने के लिए मजबूर' होना पड़ता है। इसका तात्पर्य यह था कि एक व्यक्ति को सामान्य इच्छा पर आधारित कानूनों का पालन करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

रूसो ने यह भी सुनिश्चित किया कि उनका सामान्य इच्छा का सिद्धांत अत्याचारी विचार को प्रतिपादित ना करे। व्यक्तियों की वास्तविक इच्छा अत्याचार में समाप्त नहीं होगी। उन्होंने स्वतंत्रता की वकालत की जो आत्म–निपुणता पर आधारित थी। सामान्य इच्छा से ही स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है। और सामान्य इच्छा को आकार देने वाले व्यक्ति समाज में अपनी अनावश्यक इच्छाओं और स्वार्थी मांगों पर पहले से ही आत्म–निपुणता प्राप्त कर चुके होंगे। लेकिन आलोचकों ने रूसो की जनरल विल के विचार को चुनौती देना जारी रखा।

वास्तव में, रूसो के जनरल विल के विचार ने सहभागी लोकतंत्र के कई समकालीन सिद्धांतकारों को प्रेरित किया। व्यक्तिगत अधिकारों के संरक्षण में असमर्थता के लिए कैरोल पेटमैन ने उदार लोकतंत्र की कड़ी आलोचना की। उन्होंने कहा कि उदार लोकतंत्र औपचारिक अधिकारों की सार्वभौमिकता और वर्ग असमानता की व्यापकता के बीच मौजूद अंतर्विरोध को एक ही समय में हल करने में सक्षम नहीं हैं। उन्होंने लोकतंत्र को बढ़ाने और राजनीति में निर्णय लेने के लिए स्व–प्रबंधन और समुदाय के सदस्यों की भागीदारी का सुझाव दिया। यह समाज में मौजूद असमानताओं को कम करेगा जिसके परिणामस्वरूप न्याय, शांति और सामाजिक व्यवस्था होगी। उन्होंने बाजार की अस्थिरता, संसाधनों के प्रभावी समन्वय और विभिन्न प्रकार के कौशल और श्रम की उपलब्धता के विभिन्न मुद्दों से निपटने के लिए कार्यस्थल पर लोकतंत्र की भी मांग की। वह जानती थीं कि लोकतंत्र को दक्षता और नेतृत्व के साथ सामंजस्य बिठाना होगा। वह राजनीतिक संस्थाओं, राजनीतिक दलों, समय–समय पर होने वाले चुनावों, राजनीतिक प्रतिनिधियों के पक्ष में थीं, लेकिन प्रत्यक्ष लोकतंत्र और इसमें पार्टी और हित समूहों की प्रतिस्पर्धी भागीदारी चाहती थीं। इसलिए, रूसो की सामान्य इच्छा, हालांकि, उदारवादी सिद्धांतकारों के कई पक्षों ने उनके सिद्धांत को अधिनायकवादी करार दिया, लेकिन इसने वास्तविक लोकतंत्र के निर्माण के लिए निर्णय लेने में लोगों की भागीदारी को भी प्रोत्साहित किया है।

बोध प्रश्न 4

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।
ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) रूसो की सामान्य इच्छा की अवधारणा और इस पर उनकी प्रतिक्रिया की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.7 सारांश

इस इकाई में, हमने अध्ययन किया कि एक व्यक्ति जो स्वेच्छा से प्रकृति की स्थिति से, जो सद्भाव और खुशी का प्रतिनिधित्व करता है, दुख की स्थिति में चला जाता है, फिर से नागरिक समाज में नैतिकता और स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है।

रूसो ने सामान्य इच्छा को समाज में कानून बनाने के आधार के रूप में प्रतिपादित किया। सामान्य इच्छा सभी के हितों पर निर्भर करती है। यह विशेष वसीयत के विपरीत है जो व्यक्तिगत सदस्यों के केवल स्वार्थी और निहित स्वार्थों को ध्यान में रखता है। सामान्य इच्छा पर बनाया गया संविधान व्यक्तियों की स्वतंत्रता और स्वायत्तता को बढ़ाएगा। यह एक व्यक्ति को कुलीन जंगली से एक मानवीय व्यक्ति में बदल देगा। लेकिन इस सामान्य इच्छा को कानूनों के रूप में स्थापित करना होगा। सामान्य इच्छा को कानूनों में प्रतिबिंबित करना होगा। जनता को नैतिकता के आधार पर कानून बनाने होंगे। इस विचार पर रूसो ने अपनी प्रसिद्ध पंक्तियाँ दीं 'मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है लेकिन हर जगह वह जंजीरों में बँधा होता है'। इसका मतलब था कि मनुष्य स्वभाव से स्वतंत्र पैदा हुआ था लेकिन जब वह एक संप्रभु राज्य में चला गया, तो उसे नैतिकता पर बने नियमों और विनियमों की जंजीरों में डाल दिया गया।

रूसो ने सामान्य इच्छा की विभिन्न अवधारणाओं को खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि अलग–अलग लोगों/समूहों के लिए सामान्य इच्छा का कोई अलग विचार मौजूद नहीं है। सामान्य इच्छा या जनता का कल्याण सभी के लिए समान है। सामान्य इच्छा के सफल क्रियान्वयन से ही समाज में शांति एवं व्यवस्था कायम की जा सकती है। एक व्यक्ति नैतिक रूप से तब बदलेगा जब वह दूसरों का भला सोचेगा।

रूसो ने कहा कि स्वतंत्रता और प्राधिकार विलोम नहीं हैं। वे एक दूसरे के विरोध में खड़े नहीं होते। प्राधिकार का अर्थ किसी तीसरे पक्ष को शक्तियों का पूर्ण समर्पण नहीं है। बल्कि महान सत्ता स्वतंत्रता के विस्तार में सुविधा प्रदान करेगी। लेकिन उन्होंने कहा कि कोई भी व्यक्ति अधिकार और कानूनों से ऊपर नहीं होना चाहिए क्योंकि वे सामान्य इच्छा के आधार पर बने होते हैं। रूसो ने सामान्य इच्छा की तुलना प्रकृति के कार्य से की। जैसे प्रकृति सामंजस्यपूर्ण, शांतिपूर्ण और शांत है, वैसे ही सामान्य इच्छा समाज में सद्भाव और शांति लाएगी।

रूसो ने सामान्य इच्छा के उल्लंघनकर्ताओं से निपटने के तरीके भी तैयार किए हैं। उनका कहना है कि जो लोग सामान्य इच्छा का पालन नहीं करेंगे, उन्हें स्वतंत्र होने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। इसका मतलब है कि समाज को स्वतंत्र बनाने के लिए कानून होंगे और सजा देनी होगी।

रूसो की सामान्य इच्छा दो तरह से सामान्य थी– उत्पत्ति की सामान्यता और वस्तु की सामान्यता। पहले का मतलब था कि कानून लोगों को बनाना है और दूसरे का मतलब है कि कानून सभी के हित में होना चाहिए।

उन्होंने स्वतंत्रता और समानता को अन्योन्याश्रित भी माना। असमान समाज उदार नहीं हो सकता। जो कोई भी दूसरों पर शासन करता है वह गुलामी है, स्वतंत्रता नहीं। संप्रभुता, रूसो के लिए अविभाज्य थी क्योंकि संप्रभु शक्ति किसी तीसरे पक्ष या सम्राट में नहीं होती है, बल्कि यह लोगों में निहित होती है। उन्होंने बहुसंख्यक लोकतंत्र के विचार का भी तिरस्कार किया क्योंकि बहुमत शासन सामान्य इच्छा का प्रतिनिधित्व नहीं करता है।

वह नागरिक धर्म के पक्ष में थे, क्योंकि इससे राज्य की नैतिक नींव और समुदाय के सदस्यों में अनुशासन, सद्भावना के सकारात्मक विचार पैदा होंगे। उनका मानना था कि राष्ट्रीय शिक्षा राष्ट्रीय भावना और चरित्र निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने सहनशीलता को महत्व दिया क्योंकि इससे उनमें लालच, वासना और स्वार्थ जैसे नकारात्मक गुणों पर आत्म–नियंत्रण का मूल्य पैदा होगा।

रूसो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जनरल विल का शासन चाहता था। उन्होंने संघर्षों और युद्धों के आवर्तक संकट से निपटने के लिए विश्व स्तर पर राष्ट्रों के एक संघ की आकांक्षा की। रूसो ने उदारवादी सिद्धांतकारों से बहुत आलोचना अर्जित की है, जिन्होंने उनके सामान्य इच्छा सिद्धांत को अधिनायकवादी के रूप में खारिज कर दिया। दूसरे, सामान्य इच्छा के गठन में समय लगता है और एक बहुत लंबी प्रक्रिया है जो विधायी कार्य में देरी करेगी। तीसरा, उनका यह विश्वास कि समाज पर केवल वास्तविक इच्छा से ही शासन किया जा सकता है, बहुत काल्पनिक था। तभी रूसो का कहना है कि 'मनुष्य को स्वतंत्र होने के लिए मजबूर होना पड़ता है'।

3.8 संदर्भ

- झा, शेफाली. (2018). *पॉलिटिकल थॉट – फ्रॉम एनशिएंट थीक्स टू मार्डन टाइम्स.* नोएडा. पियर्सन इंडिया एजुकेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड.
- मुखर्जी, सुब्रत और रामास्वामी, सुशीला. (2011). *ए हिस्ट्री ऑफ पॉलिटिकल थॉट – प्लेटो टू मार्क्स.* नई दिल्लीः पीएचआई लर्निंग.
- नेल्सन, ब्रायन आर. (1996). *पॉलिटिकल थॉट – फ्रॉम सोक्रेटिस टू द ऐज ऑफ आइडियालजी.* इलिनोइसः वेवलैंड प्रेस.
- स्ट्रॉस, लियो और जे क्रॉप्सी. (1987). *हिस्ट्री ऑफ पॉलिटिकल फिलासफी.* शिकागोः विश्वविद्यालय प्रेस.

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रकाश डाला जाना चाहिए
   - रूसो का सामाजिक अनुबंध
   - सामान्य इच्छा और विशेष इच्छा के बीच अंतर
   - जिसके आधार पर कानून बनते हैं

बोध प्रश्न 2

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रकाश डाला जाना चाहिए
   - सहभागी सरकार का समर्थन किया और इसके कारण बताएं
   - रूसो की स्वतंत्रता की परिभाषा
   - सामान्य इच्छा की प्राप्ति चाहता था

बोध प्रश्न 3

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रकाश डाला जाना चाहिए
   - राष्ट्रों के संघ के गठन के कारण
   - संघ के गठन के लिए चार शर्तें
   - एक संघ के निर्माण के लिए पाँच लेख

बोध प्रश्न 4

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रकाश डाला जाना चाहिए
   - एक अधिनायकवादी है
   - नारीवादी आलोचना
   - सामान्य इच्छा स्वतंत्रता की प्राप्ति की ओर ले जाएगी। सहभागी लोकतंत्र के समकालीन सिद्धांतकारों को प्रेरित किया।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY